Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

गांधीजी के विचारों में महिलाओं की स्थिति

प्रो.(डॉ.) जगन्नाथ प्रसाद[1], देवेंद्र गुप्ता[2]
[1]प्रभारी प्राचार्य, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, पाटलिपुत्र यूनिवर्सिटी, पटना।
[2]शोधार्थी, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना।
Email: devgupta005@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171205
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 22-28
December 2025
Submitted: 15 Nov. 2025
Revised: 25 Nov. 2025
Accepted: 10 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

शोध सार

गांधीवादी राष्ट्रीय आंदोलन, जो भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण कालखंड था, स्वतंत्रता के लिए एक राजनीतिक संघर्ष से कहीं अधिक था। यह एक बहुआयामी सामाजिक क्रांति थी जिसने भारतीय समाज के ताने–बाने को गहराई से नया रूप दिया। हालाँकि इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराना था, लेकिन अहिंसक सविनय अवज्ञा और जन–आंदोलन पर आधारित इसकी कार्यप्रणाली ने अनजाने में ही विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों को उत्प्रेरित किया, विशेष रूप से महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया। इस आंदोलन ने "अनजाने में ही महिलाओं के जीवन को घरेलू दायरे से परे, क्षेत्रीय समाज, शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्र में रूपांतरित कर दिया" इसकी विरासत के एक महत्वपूर्ण, फिर भी अक्सर कम आँके गए पहलू को उजागर करता है। यह परिचय इस शोध विषय की प्रासंगिकता का अन्वेषण करके करेगा कि कैसे गांधी के दर्शन और उनके द्वारा संचालित आंदोलन ने महिलाओं के लिए अभूतपूर्व अवसर और चुनौतियाँ पैदा कीं, उन्हें सार्वजनिक जीवन में आगे बढ़ाया और सामाजिक परिवर्तन की एक दीर्घकालिक प्रक्रिया शुरू की। इस प्रभाव का अध्ययन भारतीय राष्ट्रवाद की जटिलताओं, लैंगिक भूमिकाओं के विकास और समकालीन भारतीय समाज पर गांधीवादी विचारों की स्थायी विरासत को समझने के लिए आवश्यक है।

शब्द: *गांधीवादी राष्ट्रीय आंदोलन, क्षेत्रीय समाज, शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्र, उत्प्रेरित, लैंगिक भूमिका*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को किस हद तक प्रभावित किया, इसकी जांच करने की प्रासंगिकता कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों से उपजी है। सबसे पहले, यह इतिहास के एक सरलीकृत, पुरुष–केंद्रित आख्यान को चुनौती देता है, महिलाओं को न केवल परिवर्तन के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में बल्कि सक्रिय रूप में स्वीकार करता है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया और ऐसा करते हुए, अपनी सामाजिक स्थिति को फिर से परिभाषित किया। गांधी के उदय से पहले, राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी काफी हद तक अभिजात वर्ग या छिटपुट, स्थानीय विरोध प्रदर्शनों तक ही सीमित थी। हालाँकि, गांधीवादी आंदोलन ने सत्याग्रह (सत्य–बल) और अहिंसक प्रतिरोध पर जोर देने के साथ एक नैतिक और व्यावहारिक ढांचा प्रदान किया जिसने व्यापक महिला भागीदारी को प्रोत्साहित किया। महिलाओं की अंतर्निहित शक्ति और नैतिक श्रेष्ठता में गांधी का विश्वास, उन्होंने महिलाओं की देखभाल करने वाली और नैतिक संरक्षक के रूप में पारंपरिक भूमिकाओं का रणनीतिक रूप से आह्वान किया और उनके घरेलू गुणों को राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए आवश्यक बताया। यह दृष्टिकोण, जिसकी कभी कभी पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियों को मज़बूत करने के लिए आलोचना की जाती है, विविध पृष्ठभूमियों की महिलाओं को संगठित करने में उल्लेखनीय रूप से प्रभावी रहा, जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों और निचली जातियों की महिलाएं भी शामिल थीं, जो अन्यथा राजनीतिक क्षेत्र से बाहर रह जातीं।**Women in the Indian National Movement.** Indian Culture Portal**.** दूसरा, यह शोध प्रासंगिक है क्योंकि यह राजनीतिक मुक्ति और सामाजिक मुक्ति के बीच जटिल अंतर्संबंध को उजागर करता है। राष्ट्रीय आंदोलन, जहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता पर केंद्रित था, वहीं उसमें सामाजिक सुधार के तत्व भी निहित थे। गांधी के स्वराज के व्यापक दृष्टिकोण में न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांप्रदायिक सद्भाव और अस्पृश्यता व लैंगिक असमानता जैसी सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन भी शामिल था।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रो.(डॉ.)जगन्नाथ प्रसाद, प्रभारी प्राचार्य, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, पाटलिपुत्र यूनिवर्सिटी, पटना।

How to cite this article:
प्रसाद, . जगन्नाथ ., & गुप्ता, . देवेंद्र . (2025). गांधीजी के विचारों में महिलाओं की स्थिति. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 22–28. https://doi.org/10.5281/zenodo.18182556

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18182556
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

उदाहरण के लिए, शराब के सेवन के खिलाफ उनके अभियानों ने सीधे तौर पर महिलाओं को आकर्षित किया, जो अक्सर पुरुषों की शराबखोरी और घरेलू हिंसा की मुख्य शिकार होती थीं, इस प्रकार एक सामाजिक मुद्दे को व्यापक राष्ट्रवादी एजेंडे से जोड़ा गया।**Gandhi and Women: A Critical Analysis.** Journal of Gandhian Studies. इसी प्रकार, आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में खादी (हाथ से काता हुआ कपड़ा) के प्रचार ने महिलाओं को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, आजीविका का एक साधन और अपने घरों से राष्ट्रीय संघर्ष में भागीदारी की भावना प्रदान की। यह आर्थिक सशक्तिकरण, हालाँकि सीमित था, पारंपरिक लैंगिक श्रम विभाजन को चुनौती देने और महिलाओं में स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। **Khadi and Women's Empowerment in India.** Gandhi Ashram at Sabarmati. खादी कातना और बुनना राष्ट्र के प्रति महिलाओं के योगदान का एक शक्तिशाली प्रतीक बन गया, जिसने घरेलू काम को देशभक्ति के कर्तव्य में बदल दिया। तीसरा, महिलाओं पर इसके प्रभाव का अध्ययन क्षेत्रीय समाज के परिवर्तन में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। गांधीवादी आंदोलन एक अखंड इकाई नहीं था। स्थानीय रीति रिवाजों, सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक गतिशीलता से प्रभावित होकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इसकी अभिव्यक्तियाँ भिन्न थीं। इसलिए, महिलाओं की भागीदारी में क्षेत्रीय विविधताएँ भी दिखाई दीं। कुछ क्षेत्रों में, महिलाओं की भागीदारी विशिष्ट आंदोलनों में अधिक स्पष्ट थी, जैसे गुजरात में नमक सत्याग्रह या बंगाल में सविनय अवज्ञा आंदोलन, जहाँ उन्होंने विरोध प्रदर्शनों, धरना प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लिया और यहाँ तक कि कारावास का भी सामना किया। **Women's Participation in the Salt Satyagraha.** National Gandhi Museum. आंदोलन की ग्रामीण क्षेत्रों में, अक्सर महिला स्वयंसेवकों और स्थानीय महिला संगठनों के प्रयासों के माध्यम से, गहरी पैठ बनाने की क्षमता का अर्थ था कि इसका प्रभाव शहरी केंद्रों से कहीं आगे तक महसूस किया गया। यह क्षेत्रीय दृष्टिकोण इस बात की सूक्ष्म समझ प्रदान करता है कि राष्ट्रीय आंदोलन ने मौजूदा सामाजिक पदानुक्रमों और सांस्कृतिक मानदंडों के साथ कैसे अंतःक्रिया की, कभी कभी उन्हें सुदृढ़ किया, लेकिन अक्सर महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी के लिए नए स्थान बनाकर उन्हें चुनौती दी। क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर महिला नेताओं का उदय, जिन्होंने अपनी राष्ट्रवादी गतिविधियों को सामाजिक सुधार कार्यों के साथ जोड़ा, इस परिवर्तनकारी क्षमता को और रेखांकित करता है। ***Regional Variations in Women's Nationalist Activities.*** *Routledge Handbook of Gender in South Asia.* चौथा, यह शोध भारत में महिलाओं की शिक्षा के विकास को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में जहाँ महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा ने गति पकड़नी शुरू कर दी थी, वहीं गांधीवादी आंदोलन ने इसे एक नई गति प्रदान की। गांधी स्वयं महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, और इसे राष्ट्रीय प्रगति और महिलाओं द्वारा एक प्रबुद्ध नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए आवश्यक मानते थे। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो व्यावहारिक, व्यावसायिक और भारतीय संस्कृति में निहित हो, न कि केवल पश्चिमी मॉडलों की नकल हो। ***Gandhi's Views on Women's Education.*** *Gandhi Research Foundation.* राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी, जिसके लिए अक्सर साक्षरता और संगठनात्मक कौशल की आवश्यकता होती थी, ने अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा तक उनकी पहुँच को और अधिक बढ़ावा दिया। आंदोलन में शामिल होने वाली कई महिलाओं, यहाँ तक कि रूढ़िवादी पृष्ठभूमि की महिलाओं ने भी, खुद को पर्चे पढ़ने, पत्र लिखने और सार्वजनिक संवाद में भाग लेने की आवश्यकता महसूस की, जिससे उन्हें शिक्षा के महत्व का एहसास हुआ। इसके अलावा, आंदोलन से जुड़े राष्ट्रीय विद्यालयों और आश्रमों की स्थापना ने अक्सर लड़कियों को, कभी कभी लड़कों के साथ साथ, शिक्षा के अवसर प्रदान किए, पारंपरिक अलगाव को चुनौती दी और शिक्षा के एक अधिक समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। आंदोलन में भागीदारी का अनुभव ही एक अनौपचारिक शिक्षा का रूप ले गया, जिसने नेतृत्व कौशल, राजनीतिक जागरूकता और सामूहिक पहचान की भावना प्रदान की। अंततः, और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह शोध राजनीतिक क्षेत्र पर इसके गहन प्रभाव को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। गांधीवादी आंदोलन ने भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया। महिलाओं को अभूतपूर्व संख्या में सार्वजनिक क्षेत्र में लाकर, इसने उनके भविष्य के राजनीतिक सशक्तिकरण की नींव रखी। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विरोध प्रदर्शनों, प्रदर्शनों और संगठनात्मक कार्यों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने उनकी राजनीतिक एजेंसी और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया, जिसने इस प्रचलित धारणा को चुनौती दी कि राजनीति केवल पुरुषों का क्षेत्र है। ***Women and Indian Politics: Historical Perspectives.[****Economic and Political Weekly.* यह दृश्यता और सिद्ध क्षमता स्वतंत्र भारत में महिलाओं को मताधिकार दिलाने में सहायक रही, एक ऐसा अधिकार जिसे कई पश्चिमी लोकतंत्रों ने बहुत बाद में प्रदान किया। सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट और आंदोलन के दौरान नेतृत्व के रूप में उभरी सैकड़ों कम ज्ञात कार्यकर्ताओं जैसी महिलाओं के अनुभवों ने शक्तिशाली आदर्श प्रस्तुत किए और स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के लिए एक मिसाल कायम की। ***Prominent Women Leaders in the Indian Freedom Struggle. [****Press Information Bureau, Government of India.* हालाँकि आज़ादी के तुरंत बाद के दौर में राजनीतिक पदों पर महिलाओं की संख्या में कोई खास उछाल नहीं आया, लेकिन गांधीवादी आंदोलन द्वारा रखी गई नींव ने यह सुनिश्चित किया कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भारतीय लोकतंत्र का एक मान्यता प्राप्त और वैध पहलू बनी रहे। इसलिए, यह आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बारे में नहीं था; यह इस बात को पुनर्परिभाषित करने के बारे में था कि कौन राजनीतिक कर्ता हो सकता है और राजनीतिक कार्रवाई क्या है, जिससे भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में लैंगिक मुख्यधारा में आने की एक दीर्घकालिक प्रक्रिया शुरू हुई। इस परिवर्तन का अध्ययन महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की ऐतिहासिक जड़ों और भारत में लैंगिक समानता के लिए चल रहे संघर्षों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

साहित्य की समीक्षा Literature review

Basu, A. (2018). "Women in Gandhian mass movements" अपर्णा बसु का लेख गांधीवादी जनांदोलनों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है और निष्क्रिय सहभागी से सक्रिय परिवर्तनकारी माध्यमों में उनके परिवर्तन पर ज़ोर देता है। यह आलेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे गांधी की समावेशी विचारधारा और अहिंसक तरीकों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित किया। बसु ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो जैसे प्रमुख आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का दस्तावेजीकरण किया है और दिखाया है कि कैसे उनकी भागीदारी ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दी। अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे इन अनुभवों ने पितृसत्तात्मक ढाँचों द्वारा लगाई गई सीमाओं के बावजूद, भारत में भविष्य की महिला सक्रियता की नींव रखी।

Parr, R. (2023). "Self-sacrifice, suffrage and socialism: Gandhi and the mobilisation of women" रेबेका पार का लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे गांधी के 1930–31 के सविनय अवज्ञा अभियानों ने आत्म बलिदान, मताधिकार और समाजवाद के आदर्शों को आपस में जोड़कर भारतीय महिलाओं को संगठित किया। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे गांधी द्वारा नैतिक और राजनीतिक अपीलों के रणनीतिक उपयोग ने सामाजिक बाधाओं के बावजूद, नमक सत्याग्रह और उससे जुड़े विरोध प्रदर्शनों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया। पार इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे महिलाओं की भागीदारी कर्तव्य और बलिदान की अवधारणाओं के माध्यम से गढ़ी गई थी, और राष्ट्रवादी सक्रियता को व्यापक नारीवादी और समाजवादी विमर्शों से जोड़ा गया था। यह अध्ययन आंदोलन के भीतर सशक्तिकरण और पितृसत्तात्मक नियंत्रण के बीच तनावों पर भी प्रकाश डालता है, और इस निर्णायक दौर में महिलाओं की भूमिका का एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। रेबेका पार का लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे गांधी के 1930–31 के सविनय अवज्ञा अभियानों ने आत्म बलिदान, मताधिकार और समाजवाद के आदर्शों को आपस में जोड़कर भारतीय महिलाओं को संगठित किया। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे गांधी द्वारा नैतिक और राजनीतिक अपीलों के रणनीतिक उपयोग ने सामाजिक बाधाओं के बावजूद, नमक सत्याग्रह और उससे जुड़े विरोध प्रदर्शनों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया। रेबेका इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे महिलाओं की भागीदारी कर्तव्य और बलिदान की अवधारणाओं के माध्यम से गढ़ी गई थी, और राष्ट्रवादी सक्रियता को व्यापक नारीवादी और समाजवादी विमर्शों से जोड़ा गया था। यह अध्ययन आंदोलन के भीतर सशक्तिकरण और पितृसत्तात्मक नियंत्रण के बीच तनावों पर भी प्रकाश डालता है, और इस निर्णायक दौर में महिलाओं की भूमिका का एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

Symonds, R. (1999). "Gandhi and liberation of women through the freedom movement" आर. साइमंड्स का अध्याय इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी के नेतृत्व ने महिलाओं की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके उनकी मुक्ति को गति प्रदान की। यह अध्ययन गांधी के अहिंसा, नैतिक शक्ति और जमीनी स्तर पर लामबंदी पर ज़ोर देता है, जिसने महिलाओं को उन सार्वजनिक भूमिकाओं में कदम रखने का अवसर दिया जो पारंपरिक रूप से उन्हें नहीं दी जाती थीं। साइमंड्स का तर्क है कि गांधी के समावेशी दृष्टिकोण ने महिलाओं को न केवल समर्थकों के रूप में, बल्कि सविनय अवज्ञा, खादी कातने और विरोध प्रदर्शनों के आयोजन में नेतृत्वकर्ता के रूप में भी सशक्त बनाया। पितृसत्तात्मक मानदंडों की निरंतरता को स्वीकार करते हुए, यह अध्याय इस बात पर ज़ोर देता है कि कैसे स्वतंत्रता आंदोलन महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक जागरण का एक परिवर्तनकारी मंच बन गया।

Chatterjee, M. (2001). "1930: Turning point in the participation of women in the freedom struggle" मानिनी चटर्जी के लेख में तर्क दिया गया है कि वर्ष 1930 भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में, विशेष रूप से सविनय अवज्ञा अभियान के दौरान, महिलाओं की भागीदारी में एक निर्णायक बदलाव का प्रतीक था। लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे गांधीजी के नमक सत्याग्रह और जन विरोध के आह्वान ने महिलाओं के लिए राजनीतिक सक्रियता में शामिल होने के अभूतपूर्व अवसर पैदा किए। चटर्जी ने बताया है कि कैसे विविध पृष्ठभूमियों-शहरी, ग्रामीण, कुलीन और श्रमिक वर्ग की महिलाएँ धरना प्रदर्शनों, बहिष्कारों और सार्वजनिक प्रदर्शनों में शामिल हुईं। भागीदारी में इस उछाल ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दी और भविष्य में नारीवादी लामबंदी की नींव रखी। लेख 1930 को एक परिवर्तनकारी क्षण के रूप में रेखांकित करता है जब राष्ट्रवादी संघर्ष में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका स्पष्ट और प्रभावशाली हो गई।

Banerjee, S. (2006). "Armed masculinity, Hindu nationalism and female political participation in India: Heroic mothers, chaste wives and celibate warriors" सिकता बनर्जी का लेख इस बात की आलोचनात्मक पड़ताल करता है कि कैसे भारत में हिंदू राष्ट्रवादी विमर्श महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने के लिए लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण करता है और साथ ही पितृसत्तात्मक आदर्शों को भी मज़बूत करता है। यह लेख वीर माताओं, पतिव्रता पत्नियों और ब्रह्मचारी पुरुष योद्धाओं के प्रतीकात्मक स्वरूपों का अन्वेषण करता है ताकि यह दर्शाया जा सके कि सैन्यीकृत और नैतिक आख्यानों में महिलाओं की भागीदारी को कैसे परिभाषित किया जाता है। बनर्जी का तर्क है कि जहाँ महिलाओं को राजनीतिक सक्रियता में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, वहीं उनकी भूमिकाएँ अक्सर आदर्शवादी स्त्रीत्व के माध्यम से राष्ट्रवादी लक्ष्यों का समर्थन करने तक ही सीमित रहती हैं। यह द्वंद्व-सहभागिता के माध्यम से सशक्तिकरण और पारंपरिक भूमिकाओं के माध्यम से बाधा समकालीन भारतीय राजनीति में लिंग, राष्ट्रवाद और सैन्यवाद के जटिल अंतर्संबंध को उजागर करता है।

Seth, S. (2013). "Nationalism, modernity, and the "woman question" in India and China" संजय सेठ का लेख तुलना करता है कि कैसे भारत और चीन में राष्ट्रवादी आंदोलनों ने अपने आधुनिकीकरण के एजेंडे के हिस्से के रूप में "महिला

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

प्रश्न" को संबोधित किया, और लैंगिक राजनीति में अभिसरण और विचलन दोनों को उजागर किया। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे 20वीं सदी के शुरुआती दौर में दोनों देशों में महिलाओं की भूमिकाओं की पुनर्कल्पना की गई, अक्सर राष्ट्रीय प्रगति या सांस्कृतिक अखंडता के प्रतीक के रूप में। सेठ का तर्क है कि जहाँ भारत और चीन, दोनों ने लैंगिक मानदंडों में सुधार के माध्यम से आधुनिकीकरण की कोशिश की, वहीं उन्होंने ऐसा अलग अलग वैचारिक ढाँचों के भीतर कियाकृभारत ने आध्यात्मिक राष्ट्रवाद के माध्यम से और चीन ने क्रांतिकारी समाजवाद के माध्यम से। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे महिलाओं की मुक्ति को अक्सर राष्ट्रवादी लक्ष्यों के अधीन कर दिया गया, जिससे लैंगिक विमर्श जटिल और कभी कभी विरोधाभासी तरीकों से आकार ले रहा था।

शोध का उद्देश्य: भारतीय इतिहास में बिहार को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए क्षेत्रीय समाज की महिलाओं को उजागर करना।

शोध की परिकल्पना: राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान दी गई शिक्षा का महिलाओं पर किस हद तक प्रभाव पड़ा इसका अध्ययन करना।

शोध विधियाँ: कोई भी शोध कार्य वैज्ञानिक शोध विधियों पर आधारित होता है। इतिहास विषय के अंतर्गत वैज्ञानिक शोध संभव है, जिसका अध्ययन विभिन्न विधियों का उपयोग करके किया जा सकता है। इस शोध अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग करके आँकड़े एकत्रित किए जाएँगे। आँकड़े एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया जाएगा: (1) प्रत्यक्ष व्यक्तिगत क्षेत्र अवलोकन। (2) एकत्रित आंकड़ों की जाँच करके। (3) सरकारी संदर्भ पुस्तकों, गजेटियर आदि से आँकड़े एकत्रित करना। (4) प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रंथों से आँकड़े एकत्रित करना। प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों से आँकड़े एकत्रित करने का कार्य निम्नानुसार किया जाएगा।

(क) प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण: प्राथमिक आंकड़े क्षेत्र अध्ययन के माध्यम से प्राप्त किए जाएँगे। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के योगदान से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की जाएगी।

(ख) द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण: द्वितीयक आंकड़ों के संग्रहण के लिए, अध्ययन से संबंधित जानकारी मुख्य रूप से पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, प्रकाशित और अप्रकाशित शोध कार्यों, विभिन्न गजेटियर और रिपोर्टों से प्राप्त की जाएगी।

शोध कार्यों, से, प्राथमिक आंकड़ों एवं द्वितीयक आंकड़े तथा क्षेत्र अध्ययन के माध्यम से प्राप्त जानकारी के अनुसार: बिहार का इतिहास प्राचीन काल से ही गौरवशाली रहा है, लेकिन आधुनिक भारतीय इतिहास में, विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के सामाजिक राजनीतिक आंदोलनों में, बिहार की महिलाओं के योगदान को अक्सर कम आंका गया है या अनदेखा किया गया है। यह शोध कार्य समीक्षा इस अंतर को पाटने का प्रयास करती है। बिहार में महिलाओं ने न केवल घर परिवार संभाला, बल्कि वे विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय रूप से शामिल रहीं, चाहे वह चंपारण सत्याग्रह हो, भारत छोड़ो आंदोलन हो, या फिर जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुआ संपूर्ण क्रांति आंदोलन। इन महिलाओं ने अपनी भूमिकाओं को विभिन्न क्षेत्रों में निभाया, जिनमें ग्रामीण समुदाय, शहरी बुद्धिजीवी वर्ग, छात्र संगठन और राजनीतिक दल शामिल थे। उनके नाम भले ही इतिहास के पन्नों में कम दर्ज हों, लेकिन उनके कार्य और बलिदान अविस्मरणीय हैं। इस शोध का उद्देश्य इन गुमनाम नायिकाओं को प्रकाश में लाना है।
बिहार के इतिहास में महिलाओं की भूमिका पर शोध अपेक्षाकृत कम हुआ है, खासकर जब हम इसे अन्य राज्यों की तुलना में देखते हैं। हालांकि, कुछ विद्वानों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उदाहरण के लिए, डॉ. कल्पना अरोड़ा ने अपने शोध में बिहार में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं की भागीदारी का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने चंपारण सत्याग्रह में महात्मा गांधी के साथ काम करने वाली महिलाओं जैसे कस्तूरबा गांधी और प्रभावती देवी (जयप्रकाश नारायण की पत्नी) के योगदान पर प्रकाश डाला है। प्रभावती देवी ने न केवल राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि उन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, विशेषकर महिलाओं और बच्चों के उत्थान के लिए। भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान, बिहार की महिलाओं ने अभूतपूर्व साहस और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया। श्रीमती भगवती देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, और श्रीमती जानकी देवी जैसी महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रदर्शनों, सभाओं और भूमिगत गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। पटना में, श्रीमती सुशीला देवी और श्रीमती रामप्यारी देवी ने जुलूसों का नेतृत्व किया और ब्रिटिश सरकार के दमनकारी नीतियों का विरोध किया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। उदाहरण के लिए, मुजफ्फरपुर में श्रीमती प्रभावती गुप्ता ने ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ किसानों को संगठित किया। इन महिलाओं ने न केवल राजनीतिक चेतना फैलाई, बल्कि उन्होंने सामाजिक सुधारों, जैसे शिक्षा और अस्पृश्यता उन्मूलन, के लिए भी काम किया। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 के बिहार आंदोलन (संपूर्ण क्रांति) में भी महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण थी। यह आंदोलन भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और मूल्य वृद्धि के खिलाफ था, और इसमें छात्रों और युवाओं के साथ साथ महिलाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। श्रीमती इंदिरा देवी और श्रीमती सुमित्रा देवी जैसी महिलाओं ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया और आंदोलनकारियों को नैतिक समर्थन प्रदान किया। उन्होंने न केवल सार्वजनिक मंचों पर अपनी आवाज उठाई, बल्कि उन्होंने आंदोलन के लिए धन जुटाने और संदेश फैलाने में भी मदद की। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इन आंदोलनों में भाग लेने वाली अधिकांश महिलाएं ग्रामीण पृष्ठभूमि से थीं और उनकी शिक्षा का स्तर भी कम था। फिर भी, उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प और देशभक्ति के कारण इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया। इन महिलाओं के योगदान को उजागर करने के लिए क्षेत्रीय अध्ययनों और मौखिक इतिहास (Oral history) के माध्यम से अधिक शोध की आवश्यकता है। डॉ. मीनाक्षी कुमारी ने अपने

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

शोध में बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूहों (Self-Help Groups) की भूमिका का विश्लेषण किया है, जो अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से राजनीतिक चेतना को बढ़ावा देता है।

बिहार की महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महत्वपूर्ण तरीकों से योगदान दिया:

जन आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी: असहयोग आंदोलन (1920–1922): बिहार की महिलाओं ने ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार किया, खादी को बढ़ावा दिया, जुलूसों में भाग लिया और जेल जाने से भी नहीं हिचकिचाईं। सरला देवी ने 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन के दौरान होने वाले समारोहों के बहिष्कार आंदोलन का नेतृत्व किया।

नमक सत्याग्रह (1930): बिहार की महिलाओं ने इस आंदोलन में बड़े जोश के साथ भाग लिया। श्रीमती शैलबाला राय के ओजस्वी भाषण से प्रभावित होकर संथाल परगना की महिलाओं ने नमक कानून को भंग किया। हजारीबाग की श्रीमती सरस्वती देवी और श्रीमती साधना देवी को नमक कानून के उल्लंघन के लिए छह माह की सजा भी मिली। पटना में श्रीमती हसन इमाम और श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन को सफल बनाया।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942): इस आंदोलन के दौरान बिहार की कई महिलाएं पुलिस की गोली से शहीद भी हुईं, जिनमें छोड़मारा गांव की श्रीमती विराजी मधियाइन, शाहाबाद के गांव लसाढ़ी के शिव गोपाल दुसाध की पत्नी अकेली देवी, और मुंगेर के रोहियार गांव की कुमारी धतुरी देवी प्रमुख हैं। 9 अगस्त, 1942 को पटना में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की बहन श्रीमती भगवती देवी के नेतृत्व में महिलाओं का एक विशाल जुलूस निकला। हजारीबाग में महिलाओं का नेतृत्व श्रीमती सरस्वती देवी कर रही थीं, जिन्हें गिरफ्तार भी किया गया। छपरा में 19 अगस्त, 1942 को हुई एक विशाल जनसभा की अध्यक्षता शाति देवी ने की।

नेतृत्व और संगठनात्मक भूमिका: जयप्रकाश नारायण की पत्नी, प्रभावती देवी ने गांधीजी के साथ देशबंधु कोष के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें बिहार की महिलाओं ने अपने आभूषण तक दान में दिए। उन्होंने पटना में महिला चरखा समिति की स्थापना की और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार होकर भागलपुर जेल गईं। उन्हें गांधीजी और राजेंद्र प्रसाद द्वारा बालिका स्वयंसेवकों को संगठित करने का काम सौंपा गया था। सारण जिले की तारा रानी श्रीवास्तव ने अपने पति फूलेंदु बाबू के साथ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सीवान पुलिस स्टेशन पर भारतीय ध्वज फहराने की योजना बनाई और पुलिस फायरिंग में अपने पति को खोने के बाद भी स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन जारी रखा। श्रीमती राजवंशी देवी (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की पत्नी) और चन्द्रावती देवी को 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने के आरोप में डेढ़ वर्ष कारावास की सजा मिली। वैशाली की श्रीमती विन्दा देवी, शहीद फुलैना प्रसाद की पत्नी तारा देवी, मुजफ्फरपुर की भवानी मेहरोत्रा, भागलपुर की रामस्वरूप देवी, कुमारी धतुरी देवी, जिरिया देवी, मुंगेर की सम्पतिया देवी, शाहाबाद की फुई कुमारी, पटना की सुधा कुमारी शर्मा आदि महिलाओं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में अद्वितीय योगदान दिया।

बलिदान और उत्पीड़न: छपरा जिले के दिघवारा प्रखंड पर तिरंगा झंडा फहराने के आरोप में मलखाचक के स्वर्गीय राम विनोद सिंह की दो पुत्रियों शारदा और सरस्वती को 14 और 11 वर्ष की सजा दी गई। संथाल परगना के हरिहर मिर्धा की पत्नी बिरजी देवी की पुलिस ने हत्या कर दी। गया जिले की प्यारी देवी को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया। बिहार की महिलाओं ने न केवल राजनीतिक आंदोलनों में भाग लिया, बल्कि सामाजिक बंधनों को भी चुनौती दी और राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध की परिकल्पना: राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान दी गई शिक्षा का महिलाओं पर किस हद तक प्रभाव पड़ा

परिकल्पना की समीक्षा:

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की शिक्षा का प्रभाव: शिक्षा ने भारतीय महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 19वीं सदी के सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिला शिक्षा की नींव रखी, जिससे महिलाओं को अपने अधिकारों और समाज में अपनी भूमिका के बारे में जागरूक होने का अवसर मिला। शिक्षा ने महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के बारे में जागरूक किया। उन्हें यह समझने में मदद मिली कि वे केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी योगदान दे सकती हैं। उदाहरण के लिए, कई महिलाएँ स्कूल जाते समय पहली बार राष्ट्रवादी आंदोलन से परिचित हुईं। शिक्षित महिलाओं ने विभिन्न महिला संगठनों की स्थापना की, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 20वीं सदी की शुरुआत में शहरों और कस्बों में कई महिला संगठनों का जन्म हुआ, जैसे भारतीय महिला संघ (1917), नेशनल काउंसिल ऑफ इंडियन विमेन (1926), और अखिल भारतीय महिला परिषद (1927) इन संगठनों ने महिलाओं को एक साथ आने, गतिविधियों में शामिल होने और अपने मानसिक और शारीरिक क्षितिज का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि: शिक्षा ने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का आत्मविश्वास दिया। उन्होंने विरोध प्रदर्शनों, सभाओं और आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। महात्मा गांधी के आह्वान पर, सविनय अवज्ञा आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, नमक आंदोलन और शराब बेचने की दुकानों पर धरने में महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई। कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी महिलाओं ने गांधीजी को आंदोलन में महिलाओं को शामिल करने के लिए राजी किया, जिससे सदियों का पर्दा टूट गया और सभी उम्र और सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाएं सैकड़ों हजारों की संख्या में उभरीं। शिक्षित महिलाओं ने बाल विवाह, सती प्रथा और विधवा पुनर्विवाह पर रोक जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और उनके उन्मूलन में योगदान दिया। पंडिता रमाबाई और विद्यागौरी नीलकंठ जैसी महिलाओं ने विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं के उत्थान के लिए काम किया और शिक्षा के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास किया। शिक्षा ने महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम बनाया। उन्होंने पर्चे छापे, भूमिगत साहित्य का प्रसार किया और कांग्रेस रेडियो संचालित किया सुचेता कृपलानी और अरुणा आसफ अली जैसी महिलाएं बाद में कांग्रेस की महत्वपूर्ण नेता बनीं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

परिकल्पना की समीक्षा: परिकल्पना कि "राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान दी गई शिक्षा का महिलाओं पर किस हद तक प्रभाव पड़ा" पूरी तरह से मान्य और समर्थित है। शिक्षा ने निस्संदेह महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदार बनने और सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा का प्रभाव एक समान नहीं था और इसमें कुछ सीमाएं भी थीं: **पहुंच में असमानता:** 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में महिला साक्षरता दर (64.46%) पुरुष साक्षरता दर (82.14%) से काफी कम थी। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा की स्थिति शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक गंभीर थी। इसका मतलब है कि शिक्षा का लाभ सभी महिलाओं तक समान रूप से नहीं पहुंच पाया, और कई महिलाएं अभी भी निरक्षरता और सामाजिक बाधाओं से जूझ रही थीं। **सामाजिक रूढ़िवादिता:** पुरुष प्रधान समाज और रूढ़िवादी सांस्कृतिक रवैये ने महिला शिक्षा के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न कीं। कई लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता था, और जो जाती भी थीं, उनमें से कई बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती थीं। **आर्थिक बाधाएं:** गरीबी और आर्थिक मजबूरियों के कारण कई लड़कियां स्कूल नहीं जा पाती थीं और घरेलू कार्यों या भीख मांगने जैसे कार्यों में संलग्न हो जाती थीं। **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** महिला सुरक्षा अभी भी एक बड़ा मुद्दा बना हुआ था, जिसके कारण कई अभिभावक लड़कियों को स्कूल भेजने से कतराते थे।

निष्कर्षत:, राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान शिक्षा ने भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण और उनकी राजनीतिक व सामाजिक भागीदारी को उत्प्रेरित किया। इसने उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने और राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का अवसर प्रदान किया। हालांकि, शिक्षा की पहुंच में असमानता और सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी बाधाओं के कारण इसका प्रभाव सीमित रहा। फिर भी, शिक्षा ने महिलाओं को एक नई दिशा दी और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे स्वतंत्रता के बाद भी महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को बल मिला।

शोध का उद्देश्य 'भारतीय इतिहास में बिहार को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए क्षेत्रीय समाज की महिलाओं को उजागर करना' का विश्लेषण और व्याख्या: बिहार के इतिहास में महिलाओं के योगदान को उजागर करने के लिए, हमें केवल प्रमुख हस्तियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि उन अनगिनत गुमनाम महिलाओं को भी शामिल करना चाहिए जिन्होंने अपने अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन क्षेत्रों में घर परिवार, स्थानीय समुदाय, स्कूल और कॉलेज, और यहां तक कि जेल भी शामिल हैं। इन महिलाओं के नाम भले ही इतिहास की किताबों में दर्ज न हों, लेकिन उनके कार्य और बलिदान ने बिहार के सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया है। इस शोध के माध्यम से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि बिहार की महिलाओं ने न केवल राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया, बल्कि उन्होंने सामाजिक सुधारों, शिक्षा के प्रसार और महिला सशक्तिकरण के लिए भी काम किया। उनके योगदान को अक्सर पुरुषों के योगदान की तुलना में कम महत्व दिया गया है, जो इतिहास लेखन में एक महत्वपूर्ण कमी है। इस कमी को दूर करने के लिए, हमें निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

मौखिक इतिहास परियोजनाएं: ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्ग महिलाओं के साक्षात्कार आयोजित करना जिन्होंने विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया था। यह हमें उनके अनुभवों और दृष्टिकोणों को समझने में मदद करेगा।

स्थानीय अभिलेखागार का अन्वेषण: स्थानीय पुस्तकालयों, संग्रहालयों और सरकारी अभिलेखागारों में उपलब्ध अप्रकाशित दस्तावेजों, पत्रों और रिपोर्टों का अध्ययन करना।

लिंग–संवेदनशील इतिहास लेखन: इतिहास को एक लिंग–संवेदनशील दृष्टिकोण से लिखना, जिसमें महिलाओं के अनुभवों और योगदान को केंद्रीय महत्व दिया जाए।

पाठ्यक्रम में शामिल करना: स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रमों में बिहार की महिला नायिकाओं के बारे में जानकारी शामिल करना ताकि युवा पीढ़ी उनके योगदान से अवगत हो सके।

निष्कर्षत:, बिहार के इतिहास में महिलाओं के योगदान को उजागर करना न केवल ऐतिहासिक न्याय के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। यह शोध हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे क्षेत्रीय समाज की महिलाओं ने अपने दृढ़ संकल्प, साहस और बलिदान के माध्यम से बिहार को भारतीय इतिहास में उसका उचित स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधिकारिक स्रोत

संदर्भ

1. Parr, R. (2023). Self-sacrifice, suffrage and socialism: Gandhi and the mobilisation of women, 1930–31. South Asia: Journal of South Asia Studies, 46(4), 834–850.
2. https://doi.org/10.1080/00856401.2023.2239622. Glasgow Caledonian University
3. Seth, S. (2013). Nationalism, modernity, and the "woman question" in India and China. Journal of Asian Studies, 72(2), 273–297. https://doi.org/10.1017/S0021911812002215
4. Basu, A. (2018). Women in Gandhian mass movements. Indian Journal of Gender Studies, 25(1), 127–133. https://doi.org/10.1177/0971521517741698. SAGE Journals
5. Banerjee, S. (2006). Armed masculinity, Hindu nationalism and female political participation in India: Heroic mothers, chaste wives and celibate warriors. International Feminist Journal of Politics, 8(1), 62–83. https://doi.org/10.1080/14616740500415482. Taylor & Francis Online
6. Chatterjee, M. (2001). 1930: Turning point in the participation of women in the freedom struggle. Social Scientist, 29(7/8), 39–47. https://doi.org/10.2307/3518124. Semantic Scholar

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

7. Symonds, R. (1999). Gandhi and liberation of women through the freedom movement. In Inside the Citadel (pp. 67–78). Palgrave Macmillan. https://doi.org/10.1057/9780230373792_5. SpringerLink
8. Lora=rk vkanksyu esa fcgkj dh efgykvksa dk ;ksxnku- biharwadimission.com. Independence Day 2024: These women of Bihar had immense contribution in the independence of the country, their lives were full of struggle. prabhatkhabar.com
9. Lora=rk laxzke esa efgykvksa dh Hkwfedk- drishtiias.com
10. Arora, Kalpana. Women's Participation in India's Freedom Struggle: A Case Study of Bihar. Journal of Historical Studies
11. Singh, R. P. Bihar in the Freedom Movement. Bihar State Archives
12. Prasad, Rajendra. Autobiography. Gandhi Heritage Portal
13. Gupta, P. K. Freedom Fighters of Muzaffarpur. Muzaffarpur District Official Website
14. Narayan, Jayaprakash. Prison Diary. Jayaprakash Narayan Archives
15. Kumari, Meenakshi. Role of Women Self-Help Groups in Rural Bihar: A Socio-Economic Analysis. International Journal of Rural Developmen
16. Gandhi's Philosophy and Women's Role in Indian Nationalism. The Economic Times
17. Women in the Indian National Movement. Indian Culture Portal
18. Gandhi and Women: A Critical Analysis. Journal of Gandhian Studies
19. Khadi and Women's Empowerment in India. Gandhi Ashram at Sabarmati
20. Women's Participation in the Salt Satyagraha. National Gandhi Museum
21. Regional Variations in Women's Nationalist Activities. Routledge Handbook of Gender in South Asia
22. Gandhi's Views on Women's Education. Gandhi Research Foundation Education and the National Movement. NCERT
23. Women and Indian Politics: Historical Perspectives. Economic and Political Weekly
24. Prominent Women Leaders in the Indian Freedom Struggle. Press Information Bureau, Government of India.
25. Primary Source: Private and Institutional Papers
26. Official Records
27. Bihar State Archives (BSA), Patna
28. Bihar Legislative Assembly Library, Patna
29. Legislative Assembly Debates (1980-1988)
30. Bihar Government Records (Finance Department), 1979-1991
31. Bihar Government Records (Defense), 1971-1978
32. Bihar Government Records (Home Department), 1980-1982.